

संक्षिप्त परिचय

डॉ. जयभगवान गोयल

प्रथु की भूमिका पर अक्षर व्रती बिना साहिल के समन्दर

- मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य के अवान्तरण बिन्दु पर अनुसंधान की मूर्धन्य क्रांतिकारी भूमिका में अभिषिक्त ।
- लिप्यन्तरण: रुपान्तरण: एवं सम्पादन की दिशाओं के सर्वाग्रहण्य उद्घाटक और पाण्डुलिपियों के पुरातात्विक उत्खनन, लिप्यन्तरण के कौमुदी-सूत्रों के उद्गाता सिद्ध अक्षर ॥

डॉ. चन्द्रशेखर

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

- डॉ. गोयल ख्याली अमल के सौन्दर्य से सजी-धजी बागोबहार जिन्दगी जीने वाले महज एक सर्जक ही नहीं बल्कि बेहतरीम सुलझे हुए इंसान भी हैं।
- वे एक तहदार शख्सीयत और कई पहलूओंवाले व्यक्ति हैं, जिनकी विद्वता का घेराव व अहाता करना हथोड़े से पहाड़ को तोड़कर दूध की नहर लाने के बराबर है।

बालकृष्ण मुज़तर प्रख्यात उर्दू साहित्यकार

डॉ. जयभगवान गोयल साहित्य-साधना को समर्पित, अपने अत्यन्त महत्वपूर्ण, मौलिक एवं मूल्यवान लेखन के आधार पर देश भर में ख्याति प्राप्त मूर्धन्य विद्वान एवं लब्धप्रतिष्ठ लेखक हैं।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर

पूर्व प्रोफेसर एवं हिंदी विभाग के अध्यक्ष तथा यूजीसी के एंड लेटस हेल्थ डॉ गोयल की वाल्मीकि रामायण महाभारत हिंदी की वीर काव्य परंपरा मध्य युगीन काव्य संत साहित्य सूफी काव्य साहित्य हरियाणवी लोक साहित्य आदि पर शोध समीक्षा एवं ललित निबंधों की 30 पुस्तकें तथा लगभग 150 शोध पत्र तथा निबंध प्रकाशित हो चुके हैं पिछले 55 वर्षों से वहां हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में साधनारत हैं रीतिकाल का पुनर मूल्यांकन मध्य युगीन काव्य नव्या मूल्यांकन संत साहित्य नए आयाम गुरुमुखी लिपि में हिंदी साहित्य साहित्य चिंतन महाकाली संतोष सिंह और उनका काव्य गुरु प्रताप सूरज के कार्य पक्ष का अध्ययन बाबा शेख फरीद गुप काव्य चिंतन गुरु गोविंद सिंह विचार और चिंतन आदि इन की मुख्य रचनाएं हैं उनकी अनेक पुस्तकें पंजाब कुरुक्षेत्र वह पंजाबी विश्वविद्यालय पंजाब की भाषा विभाग गुरु गोविंद सिंह फाउंडेशन शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से तथा शोध पत्र एवं विभिन्न देश की प्रमुख साहित्यिक एवं शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं संस्कृति दृष्टि से संपन्न उनके संपूर्ण एवं मौलिक लेखन को हिंदी एवं पंजाबी के साहित्य जगत तथा बुद्धिजीवी वर्ग में अत्याधिक प्रतिष्ठा एवं सम्मान प्राप्त हुआ है अपने संपूर्ण में उन्होंने मानवतावाद जीवन मूल्यों नवीन सामाजिक चेतना एवं हिंदू

और सिखों की सांस्कृतिक अभिनेता का प्रतिपादन किया है बड़ी संख्या में विचारात्मक समीक्षात्मक वर्णन विवरणात्मक निबंध एवं संस्मरण और रेखाचित्र की है जो देश के प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं

गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिंदी के विपुल अज्ञात साहित्य के अन्वेषण उत्खनन अनुसंधान विवेचन एवं मूल्यांकन का प्राथमिक अग्रणी भागीरथी कार्य डॉ गोयल की विशिष्ट वह महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिस के आलोक में मध्य युगीन साहित्य की पुनः हिमांशु एवं उसका पुनर मूल्यांकन करके उन्होंने हिंदी साहित्य के मध्य युगीन साहित्य को नए आयाम नई दृष्टि और नई दिशा प्रदान की है हरियाणा में 7000 शब्दों के महाकाव्य के रचयिता हिंदी के मृत आत्मा कभी संभोग से साहित्य जगत को परिचित करवाने उन पर अभूतपूर्व महत्व का शोध कार्य करने और उनके कार्य संग्रह को हिंदी में प्रस्तुत करने का भी वही है हरियाणा में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में उसे हरियाणा की राज्य भाषा बनवाने में शैक्षणिक व प्रशासनिक क्षेत्र में संपूर्ण कथा हरियाणवी लोक साहित्य के अध्ययन को देने में भी उल्लेखनीय योगदान रहा है द्वारा संपादित हरियाणा पुरातत्व इतिहास संस्कृति साहित्य और हरियाणा की संपदा हरियाणवी लोक साहित्य पुस्तके हरियाणा प्रदेश के इतिहास संस्कृति और साहित्य पर अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए शैक्षणिक साहित्य एवं संस्कृत संस्थान द्वारा सम्मानित हुए हैं गुरु तेग बहादुर व्याख्यानमाला के अंतर्गत व्याख्यान देने के लिए पंजाबी विश्वविद्यालय द्वारा आमंत्रित अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता

- डीन, भाषा एवं कला संकाय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय।
- अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय।
- संस्थापक अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पंजाब वि. वि. क्षेत्रीय केन्द्र (सम्प्रति: म.द. विश्वविद्यालय), रोहतक।
- अध्यक्ष, संगीत विभाग, पंजाबी विभाग, लाइब्रेरी साइंस विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय।
- सदस्य: कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कार्यकारिणी समिति. संसद, कला, संकाय, शिक्षा समिति एवं पाठ्यक्रम समिति।
- पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़; पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला; गुरुनानकदेव विश्वविद्यालय, अमृतसर; हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला; महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक; दिल्ली विश्वविद्यालय, सागर विश्वविद्यालय; उदयपुर विश्वविद्यालय आदि की विभिन्न शैक्षिक समितियों के सदस्य।
- हरियाणा साहित्य अकादमी के प्राथमिक सदस्य।
- सदस्य, राज्य स्तरीय नई शिक्षा समन्वयक समिति।
- अध्यक्ष, कुरुक्षेत्र एजुकेशनल रिसर्च इन्सटीट्यूट (ट्रस्ट)।
- सदस्य, कुरुक्षेत्र जिला शांति-समिति।
- सदस्य, शिवालिक विकास बोर्ड, हरियाणा राज्य।
- संयोजक हरियाणा समन्वय समिति: प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन, दिल्ली।
- सदस्य, हरियाणा राज्य पुस्तकालय समिति।
- सदस्य, पंचनंद शोध संस्थान, चण्डीगढ़।
- सदस्य, काउंसिल फॉर इन्टरनेशनल अफेयर्स एण्ड ह्यूमन राइट्स, दिल्ली।
- सदस्य, गुरुगोबिंदसिंह त्रिशताब्दी समारोह समिति, हरियाणा राज्य, चण्डीगढ़।

- सदस्य, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग रिसर्च साईटिस्टस चयन समिति।
- अन्य अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक. शैक्षिक संस्थाओं के सक्रिय सदस्य।

प्रकाशन

शोध एवं समीक्षा की 30 पुस्तकें प्रकाशित

इनमें से अधिकांश पुस्तकें पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र; पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला; भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला; गुरु गोबिंदसिंह फाउंडेशन, चंडीगढ़; शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर तथा आत्माराम एंड संस, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हैं।

- कई पुस्तकें विभिन्न विश्वविद्यालय के एम.ए. एवं एम.फिल के पाठ्यक्रमों में निर्धारित हैं।
- विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में इन पुस्तकों की प्रशंसनीय समीक्षाएँ प्रकाशित हुई हैं।
- पिछले 40-45 वर्षों के हिंदी एवं पंजाबी के सभी मूर्धन्य विद्वानों एवं प्रतिष्ठित बुद्धिजीवियों ने इन पुस्तकों की अत्यधिक प्रशंसा की है।

प्रकाशित शोध पत्र एवं निबंध आदि

- शताधिक शोध पत्र, पंजाब विश्वविद्यालय रिसर्च बुलेटन, नागरी प्रचारिणी पत्रिका (काशी), सम्मेलन पत्रिका (इलाहाबाद), हिंदुस्तानी पत्रिका (प्रयाग), परिशोध, सप्त सिंध, विश्व ज्योति, सरस्वती संवाद, साहित्य संदेश, जागृति, रजनी गंधा, हिमप्रस्थ, विश्वभारती पत्रिका, संभावना पंजाब सौरभ, धर्मयुग, साप्ताहिक हिंदुस्तान आदि हिंदी कि लगभग सभी प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित।
- अनेक शोधपत्र पंजाबी दुनिया, आलोचना, परख आदि पंजाबी की प्रमुख शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित।
- भाषा एवं साहित्य से संबंधित लेख अंग्रेजी 'ट्रिब्यून' व 'इंडियन एक्सप्रेस' आदि में प्रकाशित।

सर्जनात्मक निबंध व अन्य विधाए

- बड़ी संख्या में समीक्षात्मक, विचारात्मक, वर्णनात्मक, विवरणात्मक एवं व्यंग्यात्मक निबंध, संस्मरण, रेखा चित्र, यात्रा विवरण, भेट वार्ताएँ एवं रिपोर्टाज़ विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। ये 'साहित्य चिंतन', 'संत साहित्य : नए आयाम', 'अंबुवा की डार पे कुके कोयला' आदि पुस्तकों में संकलित हैं।

महत्वपूर्ण ग्रंथों में योगदान :

- पंजाबी विश्वकोश, सिक्ख धर्म के विश्वकोश, गुरु नानकदेव, गुरु तेगबहादुर, गुरु गोबिंदसिंह, कमेमोरेशन वॉल्यूमों, 'हिंदी पत्रकारिता: विविध आयाम', आदि 20 महत्वपूर्ण ग्रंथों में योगदान।

संगोष्ठियों / सम्मेलनों में भाग लेना :

- लगभग 50 अखिल भारतीय एवं दो अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों / संगोष्ठियों में शोध पत्र वाचन / प्रस्तुतीकरण, उनमें कई सत्रों की अध्यक्षता करना।
- यू.जी.सी. की तीन बड़ी शोध योजनाओं पर शोध कार्य संपन्न किया।

शोध निर्देशन :

- 22 शोध-छात्रों का निर्देशन किया, जो पीएच.डी की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं।
- एम. फिल के लगभग 50 छात्रों के लघु शोध प्रबंधों का सफलतापूर्वक निर्देशन किया।

शोध पत्रिकाओं का संपादन :

- संभावना कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की शोध पत्रिका के 'सूर विशेषांक' एवं अन्य अनेक अंकों के प्रधान संपादक।
- परिशोध पंजाब विश्वविद्यालय की शोध पत्रिका के गुरु गोबिंदसिंह पर विशेषांक के सम्पादक।
- पंचनद पंचनद शोध संस्थान, चण्डीगढ़ की शोध पत्रिका के एव अंक के सम्पादक।
- 'जनरस ऑफ हरियाणा स्टडीज' (कुरुक्षेत्र वि. वि.): सदस्य, सम्पादक मण्डल।

शोध-पत्रों का संपादन, प्रकाशन :

- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध पत्रों का संपादन, जिन्हें कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया।

पुस्तक समीक्षाएँ :

- बहुत सी पुस्तकों की अनेक प्रख्यात पत्र पत्रिकाओं में समीक्षाएँ प्रकाशित।

अनुवाद कार्य :

- पंजाबी की अनेक कहानियों का हिंदी में अनुवाद जो विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई।
- उर्दू से अनेक व्यंग्यात्मक निबंधों का हिंदी में अनुवाद जो विविध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। उनका अलग से एक पुस्तक रूप में भी प्रकाशन।

विस्तार भाषणमाला/व्याख्यान :

- अखिल देशीय स्तर पर विभिन्न शिक्षा संस्थानों, कला-प्रतिष्ठानों, विश्वविद्यालयों में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर सैकड़ों व्याख्यान।

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन प्रसारण :

- आकाशवाणी के जालंधर, रोहतक तथा दिल्ली केंद्रों से साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर चालीस से अधिक वार्ताओं एवं परिसंवादों का प्रसारण।
- दूरदर्शन जालंधर केंद्र द्वारा आयोजित परिसंवादों में भाग लिया और उनका संचालन किया।

राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों में सम्मितियों का प्रकाशन :

- राष्ट्रीय सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं अन्य सामाजिक विषयों पर राष्ट्रीय समाचार पत्रों में टिप्पणियों, पत्रों तथा सम्मितियों का प्रकाशन।

सम्मान, अलंकरण, अभिनंदन :

- विभिन्न शिक्षा, कला तथा सांस्कृतिक प्रतिष्ठानों द्वारा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों के लिए भव्य सम्मान, अलंकरण तथा अभिनंदन हो चुका है।
- सिक्ख साहित्य पर अद्वितीय कार्य करने के लिए 'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी' द्वारा स्वर्ण मंदिर, अमृतसर में तथा 'केंद्रीय श्री गुरु सिंह सभा' द्वारा बंगला साहिब गुरुद्वारा दिल्ली में अकाल तख्त के मुख्य ग्रंथियों द्वारा सम्मानित किया गया।
- हरियाणा प्रादेशिक साहित्य सम्मेलन द्वारा हरियाणा के सर्वोच्च लेखक के रूप में सम्मानित।
- हरियाणा के भाषा विभाग/साहित्य अकादमी द्वारा तीन पुस्तकें पुरस्कृत।
- दयाल सिंह कॉलेज, करनाल में दीक्षांत भाषण के लिए आमंत्रित।
- 'पंजाब हिंदी अकादमी' की ओर से पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह द्वारा राष्ट्रपति भवन में सम्मानित।
- खालसा कॉलेज, यमुनानगर के रजत जयंती समारोह के अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह द्वारा सम्मानित।
- पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला द्वारा 'गुरु तेगबहादुर मेमोरियल' व्याख्यान के लिए आमंत्रित।
- पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला की सिंडिकेट एक वर्ष के लिए विजिटिंग प्रोफेसर नियुक्त (पद ग्रहण नहीं किया)।
- यूनेस्को द्वारा प्रकाशनार्थ गुरु गोबिंदसिंह की वाणी के चयन का दायित्व-पंजाबी विश्वविद्यालय द्वारा सौंपा गया। इस में निर्णायक भूमिका निभाई।
- अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट, कैरोलिना द्वारा 'मैन ऑफ द ईयर' तथा 'इंटरनेशनल कल्चरल डिप्लोमा ऑफ ऑनर' अवार्ड से सम्मानित।
- 'इंडो अमेरिकन हू इज' ; योर 'रेफरेंस एशिया' : एशियाज हू इज हं आफ मेन एंड वीमन ऑफ अचीवमेंट्स; 'रेफरेंस इंडिया'; 'बायोग्राफी इंटरनेशनल'; 'फाईव हूजेरड लीडर्स ऑफ इन्फ्लुएंस'; 'हू इज हू ऑफ इंडियन राइटर्स' (साहित्य अकादमी, दिल्ली) आदि उपलब्धियाँ दर्ज।
- देश भर के लगभग 50 प्रमुख विश्वविद्यालयों में पीएच.डी के शोध प्रबंधों के परीक्षण, व्याख्यानों अथवा चयन समितियों के सदस्य के रूप में आमंत्रित।
- कई राज्यों के 'लोक सेवा आयोग' में प्राध्यापकों के चयन में सहयोगी सदस्य।
- आकाशवाणी के समाचार वक्ताओं की चयन समिति में सदस्य।
- हरियाणा साहित्य अकादमी के निदेशक की नियुक्ति हेतु गठित चयन समिति में राज्य सरकार के मनोनीत सदस्य।
- देश भर में विभिन्न विश्वविद्यालयों के पीएच.डी./डी.लिट के लगभग 300 शोध प्रबंधकों का परीक्षण किया।

साहित्य समीक्षा की मौलिक दृष्टि :

- काव्य शास्त्रीय सिद्धांतों से समन्वित, मानवतावादी मूल्य-चेतना संपन्न, संस्कृति निष्ठ मौलिक समीक्षा दृष्टि तथा स्पष्ट समीक्षा पद्धति की एक अलग पहचान है।
- साहित्येतिहास लेखन पर मौलिक चिंतन।
- स्वरचित सर्जनात्मक साहित्य में व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों, जीवन दृष्टि, संवेगों, विचारों, सरोकारों, विश्वासों, अभिरुचियों प्रवृत्तियों आदि की अभिव्यक्ति हुई है। उसमें भाषा शैली के इंद्रधनुषी रंगों की छवियाँ हैं।

हिंदी भाषा व साहित्य के विकास में योगदान :

- 1966 में हरियाणा राज्य के गठन पर हिंदी को राज्य की प्रशासनिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठिता दिलवाने, हरियाणा लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में उचित उचित स्थान दिलवाने तथा वि.वि. की स्नातक की उपाधि के लिये हिंदी को अनिवार्य विषय बनवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- कु. वि. वि. में हिंदी के पाठ्यक्रमों में संशोधन करना, स्तर उठाना और स्नातक स्तरीय नयी पाठ्यपुस्तकें तैयार करना।
- हरियाणा साहित्य अकादमी की स्थापना में विशिष्ट भूमिका।

गुरुमुखी लिपि में रचित हिन्दी साहित्य पर
शोध एवं समीक्षा से सम्बन्धी जो हजारों पृष्ठ प्रकाशित हुए हैं
वह सम्पूर्ण लेखन, उसका प्रत्येक वाक्य, सर्वथा मौलिक है।

संक्षिप्त परिचय

प्रकाशित पुस्तके	प्रकाशक	वर्ष
1. "प्रसाद और उनका काव्य" महाकवि जयशंकर प्रसाद की सभी काव्य कृतियों का समीक्षात्मक अनुशीलन।	अंतरचंद्र कपूर एंड संस, दिल्ली	1958
2. "गुरु प्रताप सूरज के काव्य पक्ष का अध्ययन" (पुरस्कृत)। गुरुमुखी लिपि में रचित 52000 छंदों के हिंदी के इस महाकाव्य के काव्य, संस्कृति और दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन (शोध प्रबंध)। पहली बार इस महाकाव्य से हिंदी जगत को परिचित करवाया गया।	कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय	1966
3. "गुरु गोविंद सिंह : विचार और चिंतन" गुरु गोविंदसिंह की काव्य रचनाओं के आधार पर उनके दार्शनिक विचारों का विवेचन।	पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़	1967
4. "वीर कवि दशमेश" गुरु गोविंदसिंह के साहित्य में अभिव्यक्त वीर भावना का मौलिक विवेचन।	पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़	1967
5. "गुरु शोभा" (सं) गुरु गोविंदसिंह के दरबारी कवि सेनापति के इस वीरकाव्य का गुरुमुखी लिपि से हिंदी में संपादन एवं भूमिका में उसकी समीक्षा।	पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़	1967
6. "जंगनामा गुरु गोविंदसिंह" (सं) गुरु गोविंदसिंह के दरबारी कवि अणीराय की इस वीरसात्मक रचना का गुरुमुखी लिपि में संपादन एवं भूमिका में उस का समीक्षात्मक विवेचन।	पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़	1967
7. "गुरु गोविंदसिंह का वीर काव्य" गुरु गोविंदसिंह की प्रतिनिधि वीरसात्मक रचनाओं का गुरुमुखी लिपि से हिंदी में संपादन एवं विस्तृत भूमिका में उसका समीक्षात्मक अध्ययन।	गुरु गोविंद सिंह फाउंडेशन, चंडीगढ़	1967

- | | | | |
|-----|---|---------------------------------|------|
| 8. | “गुरुमुखी लिपि में हिंदी साहित्य”
“गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिंदी साहित्य का 400 पृष्ठों में प्रथम बार मौलिक समीक्षात्मक विवेचन एवं मूल्यांकन। | हिंदी साहित्य संसार,
दिल्ली | 1970 |
| 9. | “संक्षिप्त गुरु प्रताप सूरज”(सं) (हीन्दी)
पुरस्कृत
गुरुमुखी लिपि में रचित 52000 छंदों के महाकाव्य से हिंदी जगत को परिचित करवाने के लिए संपादित उसका संक्षिप्त संस्करण; भूमिका में विस्तृत समीक्षात्मक विवेचन। | पंजाब विश्वविद्यालय,
चंडीगढ़ | 1970 |
| 10. | “संक्षिप्त गुरु प्रताप सूरज” (सं) (पंजाबी)
विस्तृत समीक्षात्मक विवेचन से युक्त भूमिका के साथ इस महाकाव्य का संक्षिप्त संस्करण। | पंजाब विश्वविद्यालय,
पटियाला | 1972 |
| 11. | “वार अमर सिंह” (सं)
पटियाला दरबार के कवि केशोदास की इस वीरसात्मक रचना का गुरुमुखी लिपि से हिंदी में संपादन एवं भूमिका में उसका विवेचन। | भाषा विभाग, पंजाब
पटियाला | 1970 |
| 12. | “गुरु विलास” (सं)
सुक्खासिंह कृत गुरु गोबिंदसिंह के जीवन पर आधारित 5000 छंदों के इस वीरकाव्य का प्रथम बार गुरुमुखी लिपि से हिंदी में संपादन एवं समीक्षात्मक अनुशीलन। | भाषा विभाग, पंजाब
पटियाला | 1970 |
| 13. | “गुरु नानक प्रकाश” (सं) खण्ड 1 और खण्ड 2
महाकवि संतोखसिंह कृत गुरुनानक के जीवन पर आधारित 9000 छंदों के इस महाकाव्य का प्रथम बार गुरुमुखी लिपि से हिंदी में संपादन एवं विस्तृत भूमिका में उसका समीक्षात्मक अनुशीलन। | भाषा विभाग, पंजाब
पटियाला | 1972 |
| 14. | “रीतिकाल का पुनर्मूल्यांकन”
गुरुमुखी में उपलब्ध हिंदी साहित्य के प्रकाश में हिंदी के उत्तरमध्ययुगीन साहित्येतिहास को नये आयाम, नयी दिशा और दृष्टि देने वाली महत्वपूर्ण कृति। | आत्माराम एंड संस,
दिल्ली | 1972 |
| 15. | “मध्ययुगीन काव्य : नया मूल्यांकन ”
मध्ययुगीन साहित्य के अनेक नवीन विषयों एवं पक्षों का सर्वथा मौलिक विवेचन, जिससे मध्ययुगीन साहित्येतिहास चिंतन को नयी दिशा और दृष्टि मिलती है। | आत्माराम एण्ड संस,
दिल्ली | 1975 |
| 16. | “गुरु प्रताप सूरज”खण्ड 1 (सं.)
महाकवि भाई संतोखसिंह कृत 52000 छंदों के महाकाव्य के प्रथम खण्ड का लिप्यन्तरण एवं सभी 8 खण्डों के लिए विस्तृत एवं विशद विवेचनात्मक भूमिका। | पंजाब भाषा विभाग,
पटियाला | 1976 |
| 17. | “गुरु तेगबहादुर : चिंतन और कला” | अलंकार प्रकाशन, दिल्ली | 1978 |

- गुरु तेगबहादुर की वाणी का हीन्दी में संपादन, एवं उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समीक्षात्मक अन्शीलन।
18. "शेख बाबा फरीद और उनका काव्य" आत्माराम एण्ड संस, 1980
बाबा फरीद की वाणी का हीन्दी में सम्पादन दिल्ली
एवं उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का
19. "साहित्य चिंतन" (पुरस्कृत) आत्माराम एंड संस, 1988
21 शोधपरक निबंधों में संस्कृत एवं हिंदी के दिल्ली
विविध रूपों, संदर्भों एवं आयामों पर गंभीर नवचिंतन।
20. "संत साहित्य: नए आयाम" आत्माराम एंड संस, 1988
संत साहित्य से संबंधित अनेक नए आयामों दिल्ली
एवं संदर्भों पर नवीन प्रकाश डालने वाले विचारात्मक एवं विवेचनात्मक निबंधों का संकलन।
21. "महाकवि संतोखसिंह और उनका काव्य" आत्माराम एंड संस, 1990
हिंदी के 60000 छन्दों के महाकाव्य के दिल्ली
रचयिता महाकवि संतोखसिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवेचन एवं मूल्यांकन।
22. "गुरु काव्य चिंतन" आत्माराम एंड संस, 1995
गुरु नानक, गुरु अर्जुनदेव, गुरु तेगबहादुर दिल्ली
एवं गुरु गोबिंदसिंह के व्यक्तित्व; एवं उनकी वाणी के काव्यत्व, दर्शन तथा संस्कृति का विवेचनात्मक अन्शीलन।
23. "हरियाणा: पुरातत्व, इतिहास, संस्कृति, आत्माराम एंड संस, 1995
साहित्य एवं लोकवाणी" (सं) दिल्ली
हरियाणा के साहित्य, और संस्कृति पर एक अप्रतिम ग्रंथ।
24. "हरियाणा के साहित्य संपदा" (सं) आत्माराम एंड संस, 1996
हरियाणा में रचित संस्कृत, हिंदी एवं उर्दू के दिल्ली
साहित्य का विवेचन एवं मूल्यांकन।
25. "हरियाणवी लोक साहित्य" (सं) आत्माराम एंड संस, 1996
हरियाणवी लोक साहित्य की लोक कथा, दिल्ली
लोक गीत, लोक नाट्य, लोकोक्ति आदि विविध विधाओं का विवेचन एवं मूल्यांकन।
26. अंबुवा की डार पै कूके कोयलया आत्माराम एंड संस, 1999
20 मौलिक ललित निबन्धों, संस्मरणों, दिल्ली
व्यंग्यात्मक निबंधों, रिपोर्ताज, यात्रा विवरणों, भेटवार्ताओं आदि का संकलन।
27. "महाकवि संतोखसिंह : जीवन ते रचना" (पंजाबी) पंजाबी विश्वविद्यालय,
संतोखसिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर पटियाला
समीक्षात्मक ग्रंथ।
28. "हरियाणा साहित्यकार निर्देशिका" (सं) हरियाणा साहित्य
अकादमी, चण्डीगढ़

- | | | | |
|-----|--|--|----------|
| 29. | “खट्टा मीठा कडवा”
उर्दू के प्रख्यात व्यंगकार कन्हैयालाल कपूर के निबन्धों का उर्दू से हीन्दी में अनुवाद, तथा भूमिका में उनके निबन्धों का आलोचनात्मक अध्ययन। | लाहौर बुक शॉप,
लुधियाना | |
| 30. | “पंजाब का हीन्दी वीर काव्य”
संस्कृत, पाकृत, अपभ्रंश एवं हीन्दी की वीरकाव्य परम्परा के परिप्रेक्ष्य में गुरुमुखी लिपि में रचित हीन्दी के वीरकाव्यों का विवेचन एवं मूल्यांकन तथा ‘वीरकाव्य’ के स्वरूप पर मौलिक चिंतन। | यू. जी. सी एमेरेटस
फैलोशिप की शोध
प्रोजेक्ट के अंतर्गत
सम्पन्न शोधकार्य | प्रकाश्य |
| 31. | “गुरुओं के जीवन पर आधारित प्रबंध काव्य में हिंदू सिख एकता” | यू.जी.सी की प्रोजेक्ट के
अंतर्गत संपन्न शोधकार्य | प्रकाश्य |
| 32. | सिक्ख साहित्य के संदर्भ में “मानववाद बनाम मानवतावाद” | यू.जी.सी की प्रोजेक्ट के
अंतर्गत संपन्न शोधकार्य | प्रकाश्य |
| 33. | “काव्य सौरभ”: ‘महाकवि संतोख सिंह’
महाकवि संतोखसिंह की काव्य रचना का संक्षिप्त संस्करण तथा भूमिका में उनके काव्य की आलोचनात्मक मीमांसा। | शिरोमणि गुरुद्वारा
प्रबंधक कर्मटी, अमृतसर | |
| 34. | “महाकवि संतोखसिंह”
महाकवि संतोखसिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर समीक्षात्मक लघु पुस्तिकाएँ।
अंग्रेजी, हिंदी, पंजाबी में विश्व भर में निःशुल्क विवरण हेतु लगभग 2 लाख प्रतियां प्रकाशित। | शिरोमणि गुरुद्वारा
प्रबंधक कर्मटी, अमृतसर | |
| 35. | ‘पंजाब का हिंदी वीरकाव्य’
100 पृष्ठों का आलेख | भाषा विभाग पंजाब,
पटियाला की एक पुस्तक
में संकलित। | |
| 36. | “महाकवि संतोखसिंह”
व्यक्तित्व एवं कृतित्व
(एक अध्याय) | हरियाणा साहित्य
अकादमी चंडीगढ़ की एक
पुस्तक में संकलित। | |

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की स्नातक कक्षाओं की पाठ्य पुस्तकें

- | | | | |
|----|------------------|----------------|-----------------------------|
| 1. | निबन्ध सप्तक | प्रधान सम्पादक | बी.ए. तृतीय वर्ष (अनिवार्य) |
| 2. | गद्य गौरव | प्रधान सम्पादक | प्री.यू. (अनिवार्य) |
| 3. | पद्य पराग | प्रधान सम्पादक | बी.ए. प्रथम वर्ष (अनिवार्य) |
| 4. | अमिनव गद्य-गरिमा | प्रधान सम्पादक | प्री.यू. (ऐच्छिक) |
| 5. | पद्य परिमल | प्रधान सम्पादक | प्री.यू. (ऐच्छिक) |
| 6. | कहानी कौमुदी | प्रधान सम्पादक | बी.ए. तृतीय वर्ष (अनिवार्य) |
| 7. | रीति रंजना | प्रधान सम्पादक | बी.ए. तृतीय वर्ष (ऐच्छिक) |

8.	साहित्य रसायण	प्रधान सम्पादक	प्री.यू. (अनिवार्य)
9.	पद्य पीयूष	प्रधान सम्पादक	प्री.यू. (अनिवार्य)
10.	निबन्ध सौरभ	प्रधान सम्पादक	बी.ए. तृतीय वर्ष (ऐच्छिक)
11.	कथा माधुरी	सम्पादक	बी.ए. तृतीय वर्ष (ऐच्छिक)

निम्नलिखित महत्वपूर्ण ग्रंथों में शोध पत्रों / निबन्धों / आलेखों का अंशदान

1.	पंजाबी ऐन्साईक्लोपीडिया	पंजाब भाषा विभाग, पटियाला
2.	ऐन्साईक्लोपीडिया	पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला
3.	पंजाबी साहित्य कोश	पंजाब भाषा विभाग, पटियाला
4.	गुरु गोबिंदसिंह त्रिशती कामेमोरेशन वोल्यूम	पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला
5.	गुरु तेगबहादुर कामेमोरेशन वोल्यूम	पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला
6.	गुरु तेगबहादुर कामेमोरेशन वोल्यूम	गुरु गोबिंदसिंह फाउन्डेशन, चण्डीगढ़
7.	गुरु तेगबहादुर कामेमोरेशन वोल्यूम	शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, अमृतसर
8.	गुरु तेगबहादुर कामेमोरेशन वोल्यूम	गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय, अमृतसर
9.	एम. एस. रनधावा कामेमोरेशन वोल्यूम	पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
10.	बाबा शेख फरीद कामेमोरेशन वोल्यूम	पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला
11.	स्वामी सर्वदानन्दकामेमोरेशन वोल्यूम	-
12.	हीन्दी पत्रकारिता: विविध आयाम	नेशनल पब्लिकेशन, दिल्ली
13.	हीन्दी के प्रमुख काव्यों का मूल्यांकन	सूर्य प्रकाशन, दिल्ली
14.	हरियाणा के साहित्यकार	हरियाणा, भाषा विभाग, चण्डीगढ़
15.	हरियाणा दिग्दर्शन	लोक सम्पर्क विभाग, हरियाणा
16.	गुरु रविदास: व्यक्तित्व ते वाणी	पंजाबी अकादमी, दिल्ली
17.	गुरु नानक और उनका काव्य	नेशनल पब्लिकेशन, दिल्ली

प्रकाशित शोधपत्र / निबन्ध

(क) हिन्दी में

1.	'गुरु बिलास' एक समीक्षात्मक अध्ययन(50 पृष्ठ)	पंजाब विश्वविद्यालय रिसर्च बुलेटन, चण्डीगढ़, 1970.
2.	ब्रजभाषा के दो पंजाबी कवि	पंजाब विश्वविद्यालय रिसर्च बुलेटन, चण्डीगढ़, 1959.
3.	पंजाब के कुछ ब्रजभाषा के कवि	नागरी प्रचारिणी पत्रिका, काशी, 1959.
4.	गुरु गोबिंदसिंह के काव्य में छंद विधान	परिशोध, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, जनवरी, 1967.
5.	गुरुमुखी लिपि में खड़ी बोली, गद्य-पद्य रचना	परिशोध, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, 1966.
6.	'श्रीमद्भागवत प्राण'- भाषा	परिशोध, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, मार्च 1967.
7.	'गुरु शोभा' : कथा तत्व	सप्त सिंधु, पंजाब भाषा विभाग, पटियाला, जूलाई 1968
8.	गुरु गोबिंदसिंह दर्शन	गुरु गोबिंदसिंह स्मृति ग्रंथ, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 1967.
9.	'गरब गंजनी', जपूजी भाष्य एवं रीति रचना	सम्मेलन पत्रिका, इलाहाबाद, 1967.

- | | | |
|-----|---|---|
| 10. | हिमाचल का लोक साहित्य | विश्व ज्योति, होशयारपुर 1957. |
| 11. | पद्माकर-भक्त कवि | सरस्वती संवाद, आगरा, 1957. |
| 12. | गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिन्दी प्रबन्ध काव्यों में वात्सल्य रस | सप्तसिंधु, पंजाब भाषा विभाग पटियाला, 1966. |
| 13. | रासो शब्द की व्युत्पत्ति | साहित्य संदेश, आगरा, 1958. |
| 14. | काव्य में छन्द और 'गुरु प्रताप सूरज' की छन्द पदति | सप्तसिंधु, पंजाब भाषा विभाग, पटियाला, 1965. |
| 15. | 'गुरु प्रताप सूरज' की प्राकृतिक सृषमा | विश्लेषण, कुरुक्षेत्र, 1964. |
| 16. | संतयोद्धा सिंहो की होली | धर्मयुग, बम्बई. |
| 17. | महाकवि भाई संतोखसिंह के काव्य में होली वर्णन | साप्ताहिक हिन्दूस्तान, दिल्ली. |
| 18. | 'महिमा प्रकाश' संस्कृति और काव्य | परिशोध, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ |
| 19. | पंजाबी के कवि संतोखसिंह की हिंदी कविता | साप्ताहिक हिंदूस्तान, दिल्ली. |
| 20. | 'उद्धव शतक' | हिंदी के प्रबंध काव्यों का मूल्यांकन में संकलित |
| 21. | 'गोविंद बावनी' बनाम 'शिवा बावनी' | परिशोध, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, फरवरी 1969. |
| 22. | 'गुरु शोभा': काव्य तत्व | सप्तसिंधु, पंजाब भाषा विभाग, पटियाला, अप्रैल 1969. |
| 23. | पंजाब की ललित कलाओं में अलंकरण का स्वरूप | एम.एस. रंधावा स्मृति ग्रंथ, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ |
| 24. | गुरु नानक की स्फियों से गोष्ठी | जागृतिः, पंजाब लोक संपर्क विभाग, चण्डीगढ़ |
| 25. | 'लवी' | हिमप्रस्थ, हिमाचल लोक संपर्क विभाग, शिमला, 1966. |
| 26. | हरियाणा के लोक नायक कवि भाई संतोखसिंह | सप्तसिंधु, पंजाब भाषा विभाग, पटियाला, 1968. |
| 27. | राहूल का यात्रा साहित्य | सप्तसिंधु, पंजाब भाषा विभाग पटियाला, 1965. |
| 28. | आनंदपुर का साहित्य को योगदान | भाषा विभाग पंजाब, पटियाला द्वारा राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी के लिए प्रकाशित शोध पत्र, 1967. |
| 29. | प्रेमचंद और नानकसिंह | सरस्वती, इलाहाबाद. |
| 30. | प्रातन और आधुनिकता | धर्मयुग, मुंबई. |
| 31. | गुरु नानक का काव्य शिल्प | सप्तसिंधु, पंजाब भाषा विभाग, पटियाला, 1962. |
| 32. | 'गुरु नानक विजय' | हिंदूस्तानी, प्रयाग. |
| 33. | 'दशमग्रंथ' के वीरकाव्य की विशिष्टताएँ | सीमान्त प्रहरी, मंसूरी, अप्रैल 1967. |
| 34. | संत साहित्य का आधुनिक युग के संदर्भ में मूल्यांकन | स्वामी सर्वदानंद स्मृति ग्रंथ, दिल्ली. |
| 35. | गुरु नानक के काव्य में अप्रस्तुत विधान | सप्तसिंधु, पंजाब भाषा विभाग, पटियाला, 1970. |
| 36. | 'गुरु नानक विजय' : काव्य तत्व | साहित्य मार्ग, 1969. |
| 37. | 'गुरु बिलास' में वीरता का स्वरूप | परिशोध, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, 1969. |
| 38. | 'गुरु बिलास' : आध्यात्मिक विचार और समन्वय भावना | विश्वभारती पत्रिका, शांतिनिकेतन, दिसम्बर 1969. |
| 39. | हरियाणा का लोक साहित्य | हरियाणा पत्रिका, चण्डीगढ़, 1970. |
| 40. | हरियाणा और हिन्दी | नवभारत टाइम्स, दिल्ली. |

41. रीतिकाल का पुनर्मूल्यांकन भाषा विभाग, हरियाणा, चण्डीगढ़ द्वारा राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी के लिये प्रकाशित शोधपत्र.
42. 'सुबह के भूले' : एक समीक्षा सरस्वती संवाद, आगरा.
43. विद्या क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे धर्मयुग, बम्बई.
44. कवि नरोत्तमदास सरस्वती संवाद, आगरा.
45. भाई संतोखसिंह के काव्य में छंद विधान सप्त सिंधु भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, मार्च 1964.
46. सौंदर्यस्थली छछरौली जन साहित्य, भाषा विभाग, पंजाब पटियाला, नवंबर 1965.
47. वीर भूमि हरियाणा जन साहित्य, भाषा विभाग, पंजाब पटियाला.
48. 'गुरु नानक प्रकाश' में मंगलाचरण हिंदुस्तानी भाषा विभाग पटियाला शाही पार्क अफरीदी परिशोध, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, अगस्त 1971.
49. 'गुरु नानक प्रकाश' का प्रतिपाद्य हीन्दुस्तानी, प्रयाग, 1973.
50. भाई संतोखसिंह के काव्य में वीररस सप्तसिंधु, भाषा विभाग, पंजाब पटियाला, 1963.
51. सूफी दरवेश बाबा फरीद सप्तसिंधु, भाषा विभाग, पटियाला, अक्टूबर, 1975.
52. सूफी मत और भक्ति के संदर्भ में फरीद के काव्य का अध्ययन उत्तरप्रदेश पत्रिका, लखनऊ.
53. शेख फरीद : व्यक्तित्व और कृतित्व सिंडीकेटेड लेख, शेख फरीद मेमोरियल कमेटी, पटियाला.
54. भाई संतोखसिंह और उनका युग परिशोध, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, मार्च, 1975.
55. नानक और कबीर जागृति, लोक संपर्क विभाग, पंजाब, चंडीगढ़, मई 1974.
56. काले आई कृते मुहि हिंदुस्तानी, प्रयाग, 1976.
57. गुरु तेगबहादुर कि वैराग्य भावना गुरु तेगबहादुरः स्मृति ग्रंथ, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला
58. गुरु तेग बहादुर की वाणी में बिम्ब प्रयोग शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर द्वारा प्रकाशित गुरु तेग बहादुर स्मृति ग्रंथ.
59. बलिदान की भारतीय परंपरा और गुरु तेगबहादुर के बलिदान की विलक्षणता गुरु गोबिंदसिंह फाउंडेशन, चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार.
60. गुरु तेगबहादुर : आज के संदर्भ में जन साहित्य, भाषा विभाग, हरियाणा, चंडीगढ़ मार्च 1976.
61. गुरु तेगबहादुर का लेखकीय आदर्श पंजाब सौरभ, भाषा विभाग, पंजाब पटियाला, नवंबर 1976.
62. हरियाणा की हिंदी पत्रकारिता सप्तसिंधु, पंजाब भाषा विभाग, पटियाला, दिसंबर 1976.
63. 'महाभारत' : एक श्रेष्ठ वीरकाव्य कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, रिसर्च जनरल
64. भारतीय वीरकाव्य परंपरा और 'बाल्मीकि रामायण' कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, रिसर्च जनरल
65. गुरु तेग बहादुर का हिंदी साहित्य में स्थान 'नवमगुरु पर बारह निबंध' में संकलित, गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय, अमृतसर.

66. 'गुरु प्रताप सूरज' और हिंदी साहित्य में उसका स्थान पंजाब भाषा विभाग, पटियाला द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार के लिए प्रकाशित शोधपत्र.
67. साहित्येतिहास चिंतन और हिंदी साहित्य का इतिहास : पुनर्विचार हिंदुस्तानी, प्रयाग, मार्च 1980.
68. कुरुक्षेत्र सूर्यग्रहण पर्व साप्ताहिक हिंदुस्तान, दिल्ली, मार्च 1980.
69. समाजवादी चेतना के प्रवर्तक गुरु नानक जागृति, पंजाब लोक संपर्क विभाग चंडीगढ़.
70. मध्ययुगीन बोध एवं हिंदी का मध्ययुगीन साहित्य हिंदुस्तानी, प्रयाग.
71. साहित्येतिहास चिंतन और हिंदी साहित्य के इतिहास की अपूर्णता: गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध साहित्य के संदर्भ में हिंदुस्तानी, प्रयाग.
72. गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिंदी साहित्य पर शोध अनुशीलन, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक.
73. सूर साहित्य के संदर्भ में गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध साहित्य मार्ग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला.
74. हिंदी कृष्ण काव्य और 'कृष्णावतार' का वैशिष्ट्य शोध की अवधारणा एवं स्वरूप जागृति, पंजाब लोक संपर्क विभाग, चंडीगढ़.
75. सक्रिय कहानी और कहानी की सक्रियता 'पंजाब सौरभ', पंजाब भाषा विभाग, पटियाला.
76. प्रेमचंद साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप जागृति लोक संपर्क विभाग, पंजाब, चंडीगढ़.
77. लक्ष्मीचंद के सांगो की धार्मिक एवं नैतिक भावना का स्वरूप हरियाणा संवाद, लोक संपर्क विभाग, हरियाणा, चंडीगढ़.
78. गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिन्दी काव्य जागृति, चण्डीगढ़ (तृतीय हिंदी विश्वसम्मेलन विशेषांक).
79. हिन्दी साहित्य पर गांधी का प्रभाव जागृति लोक सम्पर्क विभाग, पंजाब, चण्डीगढ़.
80. हिन्दी सूफी प्रेमाख्यान : मूल्यांकन और पुनर्मूल्यांकन संभावना, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय.
81. 'अब मैं नाच्यो बहूत गोपाल' संभावना, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय.
82. गुरुओं की वाणी : मानवतावाद और राष्ट्रीय एकता की वाणी धर्मयुग, बम्बई.
83. खालसा पंथ : साधना में शक्ति साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दिल्ली
84. 'गुरु प्रताप सूरज' में मध्ययुगीन मानसिकता संभावना, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, 1985.
85. उदासी पंथ के प्रवर्तक बाबा श्रीचंद और सिक्ख गुरु गुरु गोबिंद सदन दिल्ली द्वारा आयोजित सेमिनार में प्रस्तुत शोधपत्र
86. संत रविदास का जीवन दर्शन हरिगंधा, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, जुलाई 1990.
87. 'जापू साहब': स्रोत काव्य संभावना, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, 1990.
88. हरियाणा का संत साहित्य 'हरियाणा: पुरातत्व, इतिहास, संस्कृति एवं साहित्य', ग्रंथ में संकलित.
89. गुरु अर्जुनदेव : धर्म के स्तंभ सिक्ख संगत पत्रिका, नांदेड
90. भाई संतोखसिंह का आचार्यत्व विश्वभारती पत्रिका, शांतिनिकेतन.
91. गुरु अर्जुन देव के ब्रह्म सिक्ख संगत पत्रिका, नांदेड
92. झहरी झहरी झीनी बूंद परती है दैनिक ट्रिब्यून, चंडीगढ़.

93.	सौन्दर्य की भारतीय परिकल्पना	दैनिक ट्रिब्यून, चंडीगढ़.
94.	फिल्मी मुकाबले	दैनिक ट्रिब्यून, चंडीगढ़.
95.	सांस्कृतिक प्रदूषण	दैनिक ट्रिब्यून, चंडीगढ़.
96.	शक्ति को है नमन	दैनिक ट्रिब्यून, चंडीगढ़.
97.	बार्ते तो बार्ते हैं, बार्तों से क्या	दैनिक ट्रिब्यून, चंडीगढ़.
98.	अंबुवा की डार पे कूके कोयलया	दैनिक ट्रिब्यून, चंडीगढ़.
99.	जब जब होती अरिस्ट अपारा	जनसत्ता, चंडीगढ़
100.	अंध विश्वास कितने सत्य	जागृति, लोक संपर्क विभाग, चंडीगढ़.

अन्य अनेक ललित निबन्ध, लेख, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्टाज़ आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

पंजाबी में प्रकाशित शोध पत्र

1.	‘विचित्र नाटक’ की वीर भावना	परख, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, 1967.
2.	‘गुरुनानक विजय’	नानक प्रकाश-पत्रिका, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 1973.
3.	‘दसमग्रंथ’ का छंद विधान	आलोचना, पंजाबी अकादमी, लुधियाना, दिसंबर 1986.
4.	‘नानक प्रकाश’	आलोचना पंजाबी अकादमी लुधियाना मार्च 1965.
5.	महाकवि भाई संतोखसिंह	पंजाबी दुनिया, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, जून 1965.
6.	‘गरब गंजनी’	आलोचना, पंजाबी अकादमी, लुधियाना.
7.	प्रेमचंद के उपासक भाई संतोखसिंह	पंजाबी दुनिया, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, दिसम्बर 1959.
8.	शैव दर्शन	पंजाबी साहित्यकोश, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला.
9.	भाई संतोखसिंह	पंजाबी साहित्यकोश, भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला.
10.	भाई संतोखसिंह का प्रकृति चित्रण	स्मारिका, महाकवि संतोखसिंह यादगार कमेटी, जालंधर

Articles published in English

1.	When Hindi was the literary language of Punjab	The Tribune, Chadigarh.
2.	Santokh Singh : Hindi Poet	The Tribune, Chadigarh.
3.	Guru Gobind Singh a Crusader	The Tribune, Chadigarh.
4.	Haryana the land of Heroes	The Tribune

- | | | |
|-----|-------------------------------------|---|
| 5. | Bhai Santokh Singh | Contributed to 'Encyclopedia of Sikhism', Punjabi University, Patiala. |
| 6. | Baba Farid and the Bhagti Movement | Presented at and published by Farid Memorial Society for an International Seminar held at Delhi 1973, |
| 7. | Folk lore of Haryana | The Tribune, Chandigarh. |
| 8. | Renowned Satirist: Kanhayalal Kapur | Indian Express, Chandigarh. |
| 9. | Commercialization of Education | The Tribune, Chandigarh. |
| 10. | Guru Nanak's humanism | Art of living, Amritsar. |

प्रकाशित शोधपत्र / लेख / निबन्ध

1. भारतीय वीरकाव्य परंपरा और 'वाल्मीकि रामायण'
2. 'महाभारत': श्रेष्ठ वीरकाव्य
3. संस्कृत 'वीरकाव्य' का स्वरूप
4. प्राकृत एवं अपभ्रंश में रचित वीरकाव्य: परंपरा और स्वरूप
5. शोध की अवधारणा और स्वरूप
6. 'मानववाद' बनाम 'मानवतावाद'
7. भारतीय परंपरा में मानववाद एवं मानवतावाद
8. साहित्येतिहास चिंतन और हिंदी साहित्य का इतिहास: पुनर्विचार
9. साहित्येतिहास चिंतन और हिंदी साहित्य के इतिहास की अपूर्णता: गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध साहित्य के संदर्भ में
10. हिंदी साहित्य का इतिहास: नए संदर्भ
11. इतिहास: संरचना, प्रक्रिया और स्वरूप
12. मध्ययुगीन बोध तथा हिंदी का मध्ययुगीन साहित्य: पुनर्विचार
13. रीतिकाल की पुनर्मूल्यांकन
14. रीतिकाल की वीररसात्मक प्रवृत्ति का स्वरूप
15. रीतिकाल का अन्य प्रमुख प्रवृत्तियां: विरभावना, भक्तिभावना
16. रीतिकाल के कवि का व्यक्तित्व, बोध और जीवन दर्शन
17. गुरुमुखी लिपि में रचित हिंदी वीरकाव्य
18. हिंदी सूफी प्रेमाख्यान : मूल्यांकन और पुनर्मूल्यांकन
19. भक्ति एवं सूफित के संदर्भ में फरीद के काव्य का अध्ययन
20. सूफी दरवेश बाबा फरीद
21. शेख फरीद : व्यक्तित्व और कृतित्व
22. संत साहित्य और उसका युगानुरूप संस्करण
23. हरियाणा का संत साहित्य
24. संत रविदास का जीवन-दर्शन
25. उदासी संप्रदाय के प्रवर्तक बाबा श्रीचंद और सिक्ख गुरु
26. गुरुओं की वाणी : मानवतावाद और राष्ट्रीय एकता की वाणी
27. गुरुओं के जीवन पर आधारित प्रबंध काव्यों में मानवतावाद
28. सिक्ख गुरुओं का 'मानववाद' एवं 'मानवतावाद'
29. 'कलि आईं कते मूही'
30. गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिंदी साहित्य

31. गुरुमुखी लिपि नागरी लिपि में लिप्यंतरण की आधारभूत पद्धति
32. गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिंदी साहित्य पर समपन्न शोध
33. पंजाब में हिंदी: 16वीं 17वीं सदी से 19वीं सदी तक की प्रमुख साहित्यिक भाषा
34. गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिंदी के प्रबंध काव्यों में वात्सल्य रस
35. गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध काव्य में होली वर्णन
36. गुरुमुखी लिपि में हिंदी खड़ी बोली गद्य-पद्य रचना
37. सूरकाव्य के संदर्भ में गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध कृष्णकाव्य और कृष्णावतार का वैशिष्ट्य
38. पंजाब के ब्रजभाषा के कुछ कवि
39. पंजाब की ललित कलाओं में अलंकरण का स्वरूप
40. क्रांतिदर्शी एवं प्रगतिशील चिंतक गुरुनानक : नयी चेतना के अग्रदूत
41. समाजवादी चेतना के प्रवर्तक गुरु नानकदेव
42. संवेदना के उद्गायक : नानक तथा कबीर
43. 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित भक्तवाणी के संदर्भ में गुरु नानक और कबीर के समकालीनता और संबंध
44. गुरु नानक की स्फुरियों से गोष्ठी
45. गुरु नानक की काव्य शैली
46. गुरु नानक के काव्य में अलंकार, प्रतीक एवं बिम्ब
47. गुरुनानक के काव्य में अप्रस्तुत विधान
48. गुरु अर्जुनदेव : सिक्ख धर्म के प्रमुख स्तम्भ
49. गुरु अर्जुनदेव के ब्रह्म
50. गुरु अर्जुनदेव : व्यक्तित्व एवं कर्षित्व
51. गुरु अर्जुनदेव का सामाजिक एवं व्यवहारिक दर्शन
52. गुरु तेगबहादुर का हिंदी साहित्य में स्थान
53. गुरु तेगबहादुर कि वैराग्य भावना
54. शहीदी की अवधारणा और तेगबहादुर के बलिदान की विलक्षणता
55. गुरु तेग बहादुर की वाणी में भक्ति
56. गुरु तेगबहादुर के काव्य में बिम्ब प्रयोग
57. गुरु तेगबहादुर : आज के संदर्भ में
58. गुरु तेगबहादुर का लेखकीय आदर्श
59. गुरु गोबिंद सिंह : एक शक्तिशाली व्यक्तित्व
60. गुरु गोबिंद सिंह का भविष्य दर्शन
61. खालसा पंथ : साधना में शक्ति का प्रवर्तन
62. 'जापू साहब' एक स्तोत्र काव्य
63. संत योद्धा सिंहो की होली
64. गुरु गोबिन्दसिंह के काव्य में छन्द विधान ('दशमग्रंथ' का छंद-विधान)
65. 'दशमग्रंथ दर्शन'
66. गुरु गोबिन्दसिंह कृत 'रामावतार' : एक वीरकाव्य
67. गुरु गोबिन्दसिंह कृत 'कृष्णावतार' एक वीरकाव्य
68. गुरु गोबिन्दसिंह कृत 'चण्डी चरित' : एक वीरकाव्य
69. गुरु गोबिन्दसिंह कृत 'विचित्र नाटक' की वीर भावना
70. आनन्दपुर का साहित्य को योगदान
71. गुरु गोबिन्दसिंह के दो दरवारी : कवि सेनापति एवम अणीराय
72. सेनापति कृत वीरकाव्य 'गुरुशोभा' : कथा तत्व
73. सेनापति कृत 'गुरुशोभा' : काव्य तत्व
74. अणीराय कृत 'जगनामा गुरु गोबिंदसिंह' : युद्ध काव्य
75. 'गुरु गोबिंद बावनी' वनाम 'शिवा बावनी'
76. 'महिमा प्रकाश' : संस्कृति और काव्य
77. 'गुरु नानक विजय' : इतिहास का मिथकीकरण

78. 'गुरु नानक विजय' : काव्य तत्व
79. 'गुरु विलास' (सूक्खा सिंह) प्रबन्धकाव्य वनाम वीरकाव्य
80. 'गुरु विलास' में वीरता का स्वरूप
81. 'गुरु विलास' : एक समीक्षात्मक अध्ययन
82. हरियाणा के लोककवि: भाई संतोखसिंह
83. हिन्दी के महाकवि संतोखसिंह और उनका युग
84. 'गुरु प्रताप सूरज' (संतोख सिंह) और हिन्दी साहित्य में उसका स्थान
85. भाई संतोखसिंह के काव्य में वीररस
86. 'गुरु प्रताप सूरज' में मध्ययुगीन मानसिकता
87. महाकवि संतोखसिंह की समन्वय भावना
88. 'गुरु प्रताप सूरज' की प्राकृतिक सृष्टि
89. काव्य में छन्द और 'गुरु प्रताप सूरज' की छंद पद्धति
90. 'गुरु प्रताप सूरज' का छंद विधान
91. भाई संतोखसिंह का आचार्यत्व
92. गरब गंजनी जपूजी भाष्य एव रीति रचना हिन्दी का प्रथम आलोचना ग्रंथ
93. गुरु नानक प्रकाश का प्रतिपाद्य
94. गुरु नानक प्रकाश की ब्रजभाषा में मंगलाचरण
95. गुरु नानक प्रकाश की ब्रजभाषा का स्वरूप
96. वाल्मिकी रामायण भाषा संतोखसिंह कृत ब्रजभाषा पद्यान्वाद्य
97. श्रीमद्भागवत पुराण भाषा ब्रज भाषा पद्यान्वाद्य
98. केशव कृत वार अमर सिंह वीरकाव्य
99. फतहनामा गुरु खालसा जी का विवेचनात्मक अध्ययन
100. रासो शब्द की व्युत्पत्ति
101. पदमाकर एक भक्त कवि
102. कवि नरोत्तमदास
103. उद्वेशतक का काव्य सौन्दर्य
104. खड़ी बोली गद्य एवं पद्य का इतिहास पुनर्विचार
105. राहलू का यात्रा साहित्य
106. लहर प्रसाद एक समीक्षात्मक अध्ययन
107. हिन्दी साहित्य पर गांधी का प्रभाव
108. प्रेमचंद साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप
109. अब मैं नाच्यो बहुत गोपाल बिकृत मनोवृत्तियों का चित्रांकन
110. समान्तर कहानी महज एक आंदोलन
111. सक्रिय कहानी और कहानी की सक्रियता
112. सबह के भूले एक समीक्षा
113. हरियाणा की हिन्दी पत्रकारिता
114. पत्रकारिता विश्वनीयता और उत्तरदायित्व
115. हिमाचल का लोक साहित्य
116. रामपुर बृशहर का लवी मेला
117. हरियाणा का लोक साहित्य
118. हरियाणा लोक वार्ता सर्वेक्षण
119. वीरभूमि हरियाणा
120. भारतीय संस्कृति का तीर्थ हरियाणा
121. जहां तहां तूम धरम बिहारो
122. अंबवा की डार पे कूके कोयलया
123. झहरि झहरि बूंद परती है
124. सौन्दर्य की भारतीय परम्परा
125. सांस्कृतिक प्रदूषण

126. कुरुक्षेत्र का सूर्यग्रहण
127. छात्रों से बातचीत
128. सौन्दर्यस्थली छछरौली
129. बातें तो बातें हैं बातों से क्या
130. इनसे बचे
131. हम नहीं क्यों नहीं कह सकते
132. अंधविश्वास कितने सत्य
133. उस्ताद पन्नी लाल
134. पुरातनता बनाम आधुनिकता एक साक्षात्कार
135. फैज़ अहमद फैज़ से मुलाकात
136. प्रेमचंद के उपासक भाई नानक सिंह से एक भेट
137. विध्याक्षेत्र कुरुक्षेत्र

देश भर की प्रमुख शोध-समालोचना एवं अन्य साहित्यिक पत्रिकाएँ तथा 'आकर ग्रंथ', जिनमें लगभग 150 शोध-पत्र / निबन्ध आदि प्रकाशित हुए:-

- | | | |
|-----|-------------------------|--|
| 1. | रिसर्च बूलेटीन | पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ |
| 2. | परिशाध | शोधपत्रिका, पंजाब विश्वविद्यालय |
| 3. | परख | शोधपत्रिका (पंजाबी) पंजाब विश्वविद्यालय |
| 4. | रिसर्च जनरल | कुरुक्षेत्र, विश्वविद्यालय |
| 5. | संभावना | शोध पत्रिका, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय |
| 6. | अनुशीलन | शोध पत्रिका, म.द. विश्वविद्यालय, रोहतक |
| 7. | साहित्य मार्ग | शोध पत्रिका, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला |
| 8. | नागरी प्रचारिणी पत्रिका | काशी |
| 9. | हिन्दुस्तानी | प्रयाग |
| 10. | सम्मेलन पत्रिका | इलाहाबाद |
| 11. | विश्वभारती पत्रिका | विश्व भारती, शांतिनिकेतन |
| 12. | परिषद् पत्रिका | पटना |
| 13. | सरस्वती संवाद | शोध पत्रिका, आगरा |
| 14. | साहित्य संदेश | शोध पत्रिका, आगरा |
| 15. | आलोचना (पंजाबी) | पंजाबी अकादमी, लुधियाना |
| 16. | आजकल | केन्द्र सरकार, दिल्ली |
| 17. | सप्तसिंधु | पंजाब भाषा विभाग, पटियाला |
| 18. | पंजाबी दूनिया (पंजाबी) | पंजाब भाषा विभाग, पटियाला |
| 19. | जागृति | पंजाब सरकार, चण्डीगढ़ |
| 20. | पंजाब सौरभ | पंजाब सरकार, चण्डीगढ़ |
| 21. | जनसाहित्य | भाषा विभाग, हरियाणा चण्डीगढ़ |
| 22. | हरियाणा संवाद | हरियाणा सरकार, चण्डीगढ़ |
| 23. | हरिगंधा | हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ |
| 24. | हिमप्रस्थ | हिमाचल प्रदेश, शिमला |
| 25. | उत्तर प्रदेश पत्रिका | उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ |
| 26. | सरस्वती | इलाहाबाद |
| 27. | हरियाणा पत्रिका | चण्डीगढ़ |

28.	विश्व ज्योति	होशियारपुर
29.	सीमन्त प्रहरी	मंसूरी
30.	सिक्ख संगत पत्रिका	नादेड
31.	धर्मयुग	मुम्बई
32.	साप्ताहिक हिन्दुस्तान	नई दिल्ली

दैनिक-पत्र

33.	नवभारत टाइम्स	दिल्ली
34.	दैनिक ट्रिब्यून	चण्डीगढ़
35.	जनसत्ता	चण्डीगढ़
36.	पंजाब केसरी	जालन्धर
37.	दी ट्रिब्यून (अंग्रेजी)	चण्डीगढ़
38.	इण्डियन एक्सप्रेस (अंग्रेजी)	चण्डीगढ़

विशिष्ट आकर ग्रंथ जिनमें शोध-पत्र शामिल हैं :-

39.	पंजाबी साहित्य कोश	पंजाबी वि. वि. पटियाला
40.	पंजाबी विश्व कोश	पं. वि. वि. पटियाला
41.	गुरु तेगबहादुर स्मृति ग्रंथ	गुरु गोबिन्दसिंह फाउन्डेशन. चण्डीगढ़
42.	गुरु गोबिन्दसिंह स्मृति ग्रंथ	पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला
43.	एस. एस. रंधावा स्मृति ग्रंथ	पंजाबी विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
44.	स्वामी सर्वदानंद स्मृति ग्रंथ	दिल्ली
45.	गुरु तेगबहादुर स्मृति ग्रंथ	पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला
46.	गुरु तेगबहादुर स्मृति ग्रंथ	शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, अमृतसर
47.	नवमगुरु पर बारह निबन्ध	गु. ना. देव विश्वविद्यालय, अमृतसर
48.	हिन्दी पत्रकारिता: विविध आयाम	नई दिल्ली
49.	बाबा शेख फरीद- स्मृति ग्रंथ	पंजाबी वि. वि., पटियाला

इनके अतिरिक्त दो अन्तर्राष्ट्रीय एवं 40 से अधिक राष्ट्रीय- स्तर की संगोष्ठीयों में शोध-पत्र प्रस्तुत।

PAPERS CONTRIBUTED TO THE FOLLOWING VOLUMES

1. Encyclopedia of Sikhism (Punjabi University).
2. Punjabi Vishwa Kesh (Punjab Language Dept.).
3. Punjabi Sahitya Kesh (Punjab University).

4. Guru Gobind Singh Commemoration Volume (Punjabi University).
5. Guru Teg Bahadur Commemoration Volume (Punjabi University).
6. Guru Nanak aur Unka Kavya (National Publication).
7. Guru Teg Bahadur Commemoration Volume (Guru Gobind Singh Foundation).
8. Guru Teg Bahadur Commemoration Volume (S.G.P.C. Amritsar).
9. Guru Teg Bahadur Commemoration Volume (G.N.D. University).
10. M.S. Randhawa Commemoration Volume (Punjab University).
11. Baba Sheikh Farid Commemoration Volume (Punjabi University).
12. Swami Sarvada Nand Commemoration Volume (Punjabi University).
13. Hindi Patra Karita: Vividh Ayam (National Publication).
14. Hindi Ke Prakukh Kavya Ka Mulyankan (Surya Publication).
15. 'Haryana Ka Sahityakar' (Haryana Language Dept.).
16. 'Haryana' (Public Relation Dept., Haryana).
17. Haryana, Puratava, Sanskriti aur Sahitya.
18. Guru Ravi Dass: Vayaktitva Te Vani (Punjabi Academy, Delhi).

पुस्तकों की समीक्षा:

मेरी विभिन्न पुस्तकों की देश की प्रमुख पत्रिकाओं एवं कई प्रतिष्ठित दैनिक पत्रों में अत्यधिक प्रशंसनीय समीक्षाएँ प्रकाशित हुई हैं। इनमें मुख्य हैं :

विश्वभारती पत्रिका	-	विश्वभारती, शांति निकेतन
नागरी प्रचारिणी पत्रिका	-	काशी
सम्मेलन पत्रिका	-	प्रयाग
परिषद पत्रिका	-	पटना
हिन्दुस्तानी	-	इलाहाबाद
सप्त सिंध	-	पंजाब भाषा विभाग, पटियाला
जागृति	-	चण्डीगढ़
साप्ताहिक हिन्दुस्तान	-	दिल्ली
दी ट्रिब्यून (अंग्रेजी)	-	चण्डीगढ़
दैनिक ट्रिब्यून	-	चण्डीगढ़
आकाशवाणी	-	जालन्धर
गुरु गोबिन्दसिंह टरसेन्टनरी सैलिब्रेशन सूडनीर (अंग्रेजी)	-	पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

यहा उल्लेखनीय है कि किसी भी पत्रिका की एक भी समीक्षा में एक शब्द भी विपरीत प्रतिक्रिया का नहीं है।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कई कई बार प्रकाशित समीक्षाओं के अतिरिक्त देश के सभी भागों से, म.म. राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, लोकसभा अध्यक्ष, केन्द्रीय मंत्री, राज्यपाल, न्यायाधीश, वि.वि. के हिन्दी एवं पंजाबी के विभाध्यक्ष, मूर्धन्य विद्वानों, प्रख्यात साहित्यकारों एवं अन्य प्रतिष्ठित बुद्धिजीवियों से प्राप्त पत्रों में मेरे संपूर्ण लेखन अथवा विभिन्न पुस्तकों की मौलिकता, विद्वता, महता, प्रामाणिकता आदि की प्रशंसा की गई है। ऐसे कुछ महानुभावों के नाम यहां प्रस्तुत हैं :

'म.म. ज्ञानी जैल सिंह'

पूर्व राष्ट्रपति, नई दिल्ली

'श्री बी.डी. जती'
 'सरदार गुरदयाल सिंह ढिल्लो'
 'सरदार हकम सिंह'
 'सरदार बूटा सिंह'
 'सरदार गुरदेव सिंह'
 'सरदार हरचरण सिंह बरार'
 'सरदार उज्जवल सिंह'
 'डॉ विष्णुकांत शास्त्री'
 'सरदार सुरजीत सिंह बरनाला'
 'सरदार तरलोचन सिंह'
 'डॉ विजयकुमार मल्होत्रा'
 'डॉ रत्नाकर पांडेय'
 'श्री कृष्णलाल शर्मा'
 'श्री बनारसीदास गुप्त'
 'श्री शांताकुमार'
 'श्री प्रेम कुमार धूमल'
 'ज्ञानी लाल सिंह'
 'ज्ञानी गुरदित सिंह'
 'डॉ. जे.एस.ग्रेवाल'
 'श्री सुरज भानू'
 'डॉ. विकास मिश्र'
 'डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा'
 'डॉ. त्रिभवन सिंह'
 'डॉ जे.एस.आहलूवालिया'
 'डॉ जोगिद्र सिंह पुआर'
 'रामधारी सिंह दिनकर' (पद्मभूषण)
 'श्री करतार सिंह दुग्गल'
 'प्रो.हरवंश सिंह'
 'प्रो.गुरबचन सिंह तालीब'
 'प्रो.हजारीप्रसाद द्विवेदी'
 'डॉ.अत्तर सिंह' (पद्मश्री)
 'डॉ.मलिक मोहम्मद'
 'डॉ.रामकुमार वर्मा'
 'डॉ.नगेंद्र'
 'डॉ.हरवंश लाल शर्मा'
 'डॉ.लक्ष्मी सागर वाष्णोय'
 'डॉ.भागीरथ मिश्र'
 'डॉ.ब्रजेश्वर वर्मा'
 'डॉ.विनय मोहन शर्मा'
 'डॉ.सावित्री सिन्हा'
 'डॉ.मदनगोपाल गुप्त'
 'डॉ.प्रेम स्वरुप गुप्त'
 'डॉ.केसरीनारायण शुक्ल'
 'डॉ.शिवकुमार मिश्र'
 'डॉ.राममूर्ति शर्मा'

उपराष्ट्रपति, नई दिल्ली
 लोकसभा अध्यक्ष, नई दिल्ली
 लोकसभा अध्यक्ष, नई दिल्ली
 केंद्रीय गृह मंत्री, नई दिल्ली
 न्यायाधीश, चंडीगढ़
 राज्यपाल, हरियाणा, चंडीगढ़
 राज्यपाल, हरियाणा, चंडीगढ़
 राज्यपाल, हिमाचल, शिमला एवं उत्तर प्रदेश
 राज्यपाल, तमिलनाडु, चेन्नई
 सांसद एवं अध्यक्ष, अल्पसंख्यक कमीशन
 सांसद, दिल्ली
 सांसद, दिल्ली
 सांसद, दिल्ली
 मुख्यमंत्री, हरियाणा
 मुख्यमंत्री, हिमाचल एवं केंद्रीय मंत्री
 मुख्यमंत्री, हिमाचल
 महानिर्देशक भाषा विभाग, पंजाब एवं
 अध्यक्ष, लोकसेवा आयोग, पंजाब
 अध्यक्ष, केंद्रीय सिंघ सभा, दिल्ली
 क्लपति गुरुनानक देव वि.वि., अमृतसर
 क्लपति पंजाब वि.वि., चंडीगढ़
 क्लपति, कुरुक्षेत्र वि.वि., कुरुक्षेत्र
 क्लपति, पटना वि.वि., पटना
 क्लपति, काशी विद्यापीठ, वाराणसी
 क्लपति, पंजाबी वि.वि., पटियाला
 क्लपति, पंजाबी वि.वि., पटियाला
 राष्ट्रकवि
 वरिष्ठ साहित्यकार (पंजाबी)
 मुख्य संपादक एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सीक्खीजम
 पंजाबी वि.वि., पटियाला
 अध्यक्ष, गुरु नानक स्टडीज पंजाबी वि.वि. चंडीगढ़
 अध्यक्ष, हिंदी विभाग, बी.एच.यू., वाराणसी
 अध्यक्ष, फरीद चेर, पंजाब वि.वि. चंडीगढ़
 क्लपति, कालीकट वि.वि., कालीकट
 अध्यक्ष, हिंदी विभाग, इलाहाबाद वि.वि.
 अध्यक्ष, हिंदी विभाग, दिल्ली वि.वि.
 अध्यक्ष, हिंदी विभाग, अलीगढ़ वि.वि.
 अध्यक्ष, हिंदी विभाग, इलाहाबाद वि.वि.
 अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सागर वि.वि.
 अध्यक्ष, हिंदी विभाग, आगरा वि.वि.
 अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कुरुक्षेत्र वि.वि.
 अध्यक्ष, हिंदी विभाग, दिल्ली वि.वि.
 अध्यक्ष, हिंदी विभाग, बडौदा
 अध्यक्ष, हिंदी विभाग, अलीगढ़
 अध्यक्ष, हिंदी विभाग, लखनऊ
 अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स. पटेल वि.वि. वल्लभ
 विध्यानगर
 अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उज्जैन

‘डॉ.माताप्रसाद गुप्त’

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान,
आगरा

‘डॉ.सुरेन्द्र सिंह कोहली’

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, पंजाब वि.वि.

‘डॉ.बलकार सिंह’

अध्यक्ष, सिक्ख स्टडीज, पंजाबी वि.वि.

‘डॉ. प्रेम प्रकाश सिंह’

अध्यक्ष, पंजाबी विभाग, पंजाबी वि.वि.

‘प्रो.प्रीतम सिंह’

अध्यक्ष, गुरुनानक स्टडीज, गुरुनानक देव, वि.वि.,
अमृतसर

PAPERS PRESENTED AT (SEMINARS/CONFERENCES) SUCH AS:

1. International Seminar on Farid at Delhi.
2. Oriental Conference at Kurukshetra.
3. Annual Seminar, Punjabi Language Dept. at Patiala.
4. Annual Seminar, Punjabi Language Dept. at Chandigarh.
5. Annual Seminar, Punjabi Language Dept. at Chandigarh.
6. Annual Seminar, Punjabi Language Dept. at Sonipat.
7. All India Guru Nanak & Sikh Studies, P.U. Chandigarh.
8. Bhartiya Hindi Parishad at Kurukshetra (21st.Annual Conference).
9. Hindi Dept. K.U. Kurukshetra (Three days Seminar on Gurmukhi Lipi Mein Hindi Sahitya under UGC Scheme).
10. Bhartiya Sahitya Parishad, Rohtak.
11. Haryana Hindi Sahitya Parishad, Rohtak.
12. Haryana Hindi Sahitya Parishad.
13. Haryana Hindi Sahitya Parishad, Rohtak.
14. Hindi Dept. m P.U. Post-graduate Dept. Rohtak.
15. Guru Nanak Mandal, Patiala.
16. Guru Gobind Singh Mandal, Chandigarh.
17. Guru Gobind Singh Foundation, Chandigarh.
18. Silver Jubilee Celebrations, Punjab Language Dept. Patiala.
19. Sheikh Farid Memorial Seminar, Lucknow.
20. U.G.C. Seminar on ‘Literary Historiography of Indian Language Originated by Sheikh Baba Farid Dept. of Medieval India Literature, Punjab University, Chandigarh.
21. U.G.C. Seminar on ‘Gandhi and Indian Literature’ organized by Dept. of ‘Bhai Veer Singh Chair’, Punjabi University.
22. U.G.C. Seminar on ‘Sufi Poetry’ organized by the Dept. of Sheikh Baba Farid Chair, Punjab University.
23. A Seminar held under the auspices of Kendri Singh Guru Sabha at Chandigarh.
24. A Seminar on Surdas organized by Punjabi University, Patiala.
25. U.G.C. Seminar on Premchand at G.N.D.U. Amritsar.

26. A Seminar organized by Hindi Dept. Bangalore University,
27. A Seminar organized by M.L.N. College, Yamuna Nagar.
28. A U.G.C. Seminar on Sant Sahitya Organized by Punjab University, Chandigarh.
29. Presided over session of UGC Seminar on 'Drama & Stage' of Punjabi University, Patiala.
30. Presided over a session of UGC Seminar on Sufi Poetry at Punjab University, Chandigarh.
31. Presented a paper on National Integration in Sikh literature, at a 'National Integration Seminar at Kanpur University'.
32. Presented a paper on 'Revolution of Ritikal' in the context of Hindi literature available in Gurmukhi script at a UGC Seminar at G.N.D. University, Amritsar.
33. Seminar on 'New Education Policy- Challenges of Education' organized by Education Dept., Haryana
34. Presented a paper on 'Problems of Teaching of Hindi literature to Post graduate classes' with special reference to Guru Pratap Suraj Granth at an All India UGC Seminar at Delhi University.
35. Presented a paper on "Guru Gobind Singh's futuristic Vision" at an All India Seminar at Guru Gobind Singh Foundation, Chandigarh.
36. Presented a paper on life & philosophy of Guru Ravi Dass, P.U. Chandigarh. (Delhi-Punjab Academy & Guru Ravi Dass Chair Dept.)
37. Presented a paper on Cultural Panorama of Guru Pratap Suraj at Bhai Veer Singh Sadan, New Delhi.
38. Presented a paper on Baba 'Shri Chand and Subh Gurus' held at Delhi Gobind Sadan.
39. Presented paper on 'Japu Ji Bhasha' at an all India seminar in Gobind Sadan, New Delhi.
40. Attended a U.G.C. workshop in Delhi for 3 days.
41. Organized an All India Seminar Sponsored by the UGC at its Director on Humanism in Sant Sahitya.
42. Presented a paper on the contribution of Bhai Santokh Singh in Hindi literature—at a seminar on Mahakavi Santokh Singh in Delhi under the auspices of Punjab Language Dept.

HONORS, AWARDS AND DISTINCTIONS

1. Honored by S.G.P.C. Amritsar. A 'Saropa' was presented at Golden Temple, Amritsar.
2. Honored by 'Kendriya Shri Guru Singh Sabha' (Amritsar). A 'Saropa' and Rs. 1100/- were presented at Bangla Sahib Gurudwara, New Delhi by the Head Priest Akal Takht, Amritsar, for distinguished work on Sikh Literature.

3. Honored by 'Haryana Pradeshik Hindi Sahitya Sammelan' at its founding day function as a distinguished Hindi writer and critic of Haryana.
4. Awarded first prizes on two books by Haryana Government.
5. Invited to deliver the convocation Address of Dyal Singh College, Karnal.
6. Advised Punjabi University which of the hymns of Guru Gobind Singh should be included in the Anthology to be published by UNESCO in all world languages.
7. Books have been published by three Universities, Punjab Government and Guru Gobind Singh Foundation.
8. Several of his books prescribed / recommended for study in M.A. and M.Phil courses in several universities.
9. References from his books have been made in several Ph.D. and MPhil theses.
10. Some of his essays and creative writings have been included in University textbooks.
11. Research scholars from all over India have expressed their utmost regards for his innovations in the fields of literature. They have all been seeking informal guidance from him from time to time, particularly under reference from their formal supervisors or their Heads of departments.
12. Given the unique honor in the form of dedication of books to him by at least three teachers of various universities who include toppers and record setters in the universities.
13. Several writers have given the honor of getting the introductions of their books written by him.
14. Has been invited to preside over various seminars, literary functions and celebrations by various institutions and other bodies.
15. His books have been most favourably commented upon in top Hindi Journals and by scholars from all over the country. As an acknowledgement of his scholarship, originality of approach and high standard of research work, rich tributes have been paid by persons no less than Shri B.D. Jatti, former Vice-President of India, Dr. G.S. Dhillon and Sardar Hukam Singh, former Speaker of Lok Sabha, Sardar H.S. Brar and Sardar Ujjal Singh, former Governors of Haryana and Punjab respectively. They have hailed his work referring to it as a great service to the cause of Hindu-Sikh unity and its further promotion.
16. Great Hindi literary doyens like Dr. Hazari Prasad Dwivedi, Dr. Ramdhari Singh 'Dinkar', Dr. Nagendra, Dr. Bhagirath Misra, personalities have highly applauded his contributions to the growth of literature opening new horizons and bringing to light the works higher to unknown.
17. Similarly, Punjabi literary personalities like Sardar Gurbachan Singh 'Talib', Dr. Attar Singh and Dr.S.S.Kohli have highly applauded his contributions.

व्याख्यानो व अन्य महत्वपूर्ण शैक्षणिक कार्यों के लिए श्रीनगर (कश्मीर) से कलीकट तक व मुम्बई से गोहाटी तक लगभग सभी प्रदेशों के निम्नलिखित लगभग 50 विश्वविद्यालयों तथा 'संघ लोकसेवा आयोग' व अन्य अनेक राज्य लोकसेवा आयोगों में आमन्त्रित।

1.	कश्मीर विश्वविद्यालय	श्रीनगर
2.	जम्मू विश्वविद्यालय	जम्मू
3.	गुरु नानकदेव विश्वविद्यालय	अमृतसर
4.	पंजाबी विश्वविद्यालय	पटियाला
5.	पंजाब विश्वविद्यालय	चण्डीगढ़
6.	हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय	शिमला
7.	म.द. विश्वविद्यालय	रोहतक
8.	कृषि विश्वविद्यालय	हिसार
9.	दिल्ली विश्वविद्यालय	दिल्ली
10.	राजस्थान विश्वविद्यालय	जयपुर
11.	जोधपुर विश्वविद्यालय	जोधपुर
12.	उदयपुर विश्वविद्यालय	उदयपुर
13.	आगरा विश्वविद्यालय	आगरा
14.	ग्वालियर विश्वविद्यालय	ग्वालियर
15.	इन्दौर विश्वविद्यालय	इन्दौर
16.	विक्रम विश्वविद्यालय	उज्जैन
17.	घासीराम विश्वविद्यालय	विलासपुर
18.	रायपुर विश्वविद्यालय	रायपुर
19.	भोपाल विश्वविद्यालय	भोपाल
20.	सागर विश्वविद्यालय	सागर
21.	अलीगढ़ विश्वविद्यालय	अलीगढ़
22.	कानपुर विश्वविद्यालय	कानपुर
23.	मेरठ विश्वविद्यालय	मेरठ
24.	कुमायूँ विश्वविद्यालय	श्रीनगर गढ़वाल
25.	गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय	हरिद्वार
26.	बी.एच.यू. विश्वविद्यालय	वाराणसी
27.	काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय	वाराणसी
28.	इलाहाबाद विश्वविद्यालय	इलाहाबाद
29.	रांची विश्वविद्यालय	रांची
30.	बडौदा विश्वविद्यालय	बडौदरा
31.	सरदार वल्लभ विश्वविद्यालय	वल्लभविद्यानगर, गुजरात
32.	केन्द्रीय विश्वविद्यालय	हैदराबाद
33.	कालीकट विश्वविद्यालय	कालीकट
34.	बैंगलूर विश्वविद्यालय	बैंगलूर
35.	मद्रास विश्वविद्यालय	मद्रास
36.	मराठवाडा विश्वविद्यालय	औरंगाबाद
37.	गौहाटी विश्वविद्यालय	गौहाटी
38.	संघ लोक सेवा आयोग	दिल्ली
39.	राजस्थान लोक सेवा आयोग	अजमेर
40.	कश्मीर लोक सेवा आयोग	श्रीनगर

41.	हिमाचल लोक सेवा आयोग	शिमला
42.	उत्तरप्रदेश लोक सेवा आयोग	इलाहाबाद
43.	बिहार लोक सेवा आयोग	पटना
44.	यू. जी. सी.	दिल्ली
45.	आकाशवाणी	दिल्ली

समय-समय पर मैं कुरुक्षेत्र वि.वि., पंजाब, वि.वि. (चण्डीगढ़), पंजाबी वि.वि. (पटियाला), गु.ना. देव वि.वि. (अमृतसर), महर्षि दयानन्द वि.वि. (रोहतक), हिमाचल प्रदेश वि.वि. (शिमला), दिल्ली वि.वि. सागर, सागर वि.वि. (सागर), उदयपुर वि.वि. आदि अनेक विश्वविद्यालयों की विभिन्न उच्च शैक्षणिक समितियों का सदस्य भी रहा हूँ।

Various bodies he served in:-

1. Dean, Faculty of Arts & Languages, K.U.K.
2. Chairman, Board of studies in Hindi (P.G.) K.U.K.
3. Chairman, M.Phil. Committee of Dept. of Hindi K.U.K.
4. Chairman, Board of Studies in Hindi (U.G.) K.U.K.
5. Member, Court- the supreme Governing Body, K.U.K.
6. Member, Executive Council, K.U.K. (2 terms)
7. Member, Academic Council, K.U.K.
8. Member, Research Degree Committee, P.U.Chandigarh.
9. Member, Board of Studies in Hindi, P.U.Chandigarh.
10. Member, Language Faculty, P.U.Chandigarh.
11. Research Committee, G.N.D.U. Amritsar.
12. Member, Language Faculty, G.N.D.U. Amritsar.
13. Member, Board of Studies in Hindi (PG) (Pbi. University, Patiala).
14. Member, Board of Studies in Hindi (U.B.) Punjabi University, Patiala.
15. Member, M.Phil. Committee, Pbi. University, Patiala.
16. Member, Board of studies in Hindi (P.G.) H.P.U. Shimla.
17. Chairman, Hindi subject committee, Haryana Board of school Education.
18. Official Member, Haryana Sahitya Academy. (2 terms)
19. Member, Board of studies in Hindi (U.G.) M.D. University, Rohtak.
20. Member, Board of P.G. & Research, Punjabi University, Patiala.
21. Member, Language Faculty, Punjabi University, Patiala.
22. Founder, President, Haryana Hindi Sahitya Parishad.
23. Member Executive, Haryana Hindi Sahitya Sammelan.
24. Chairman, Haryana Co-ordination committee for 3rd World Hindi conference.

25. Served as an expert member for selection committee in various Indian Universities, University Grants Commission, Union Public Service Commission & Several others state public service commissions.
26. Also worked as examiner for many universities of the country for D.Litt., Ph.D., and M.Phil. thesis & M.A. etc. examination and also for examinations conducted by public service commission.
27. Member, state level coordination committee of New Education Policy.
28. Member, Research Committee, H.P. University, Shimla.
29. Member, Test Book Committee, B.O.S. H.P. University, Shimla.
30. Member, Research Committee, Saugar University, Saugar.
31. Member, Postgraduate Board of studies Udaipur University, Udaipur.
32. Member, Arts Faculty, Delhi University, Delhi.
33. Member, Board of Post Graduate studies, Punjabi University, Patiala.
34. Member, Bhai Santokh Singh memorial committee, Delhi.
35. Member, Shivalik Development Board, Haryana Government.

हरियाणा के लेखकों की प्रथम प्रतिनिधि संस्था 'हरियाणा साहित्य परिषद'

संस्थापक अध्यक्ष के रूप में हिन्दी भाषा और 'हरियाणवी लोक साहित्य' के विकास में योगदान

हरियाणा राज्य के गठन के बाद 1967 ई. में रोहतक में हरियाणा की प्रथम साहित्यिक संस्था 'हरियाणा साहित्य परिषद' की स्थापना की गई, जिसका मैं संस्थापक अध्यक्ष था।

(क) इस संस्था के निम्नलिखित घोषित उद्देश्य थे :-

- 1) हरियाणा में हिन्दी को राज्य भाषा बनाना।
- 2) 'हरियाणा लोक सेवा आयोग' की परीक्षाओं में हिन्दी को उचित स्थान देना।
- 3) 'हरियाणा साहित्य अकादमी' की स्थापना।
- 4) हरियाणा में बी.ए. की उपाधि के लिए हिन्दी विषय की अनिवार्यता।
- 5) हरियाणा के मध्ययुगीन साहित्य पर शोध।
- 6) 'हरियाणवी लोकसाहित्य' का संग्रह, संकलन, अनुसंधान, अध्ययन एवं अध्यापन एवं उसका पाठ्यक्रमों में स्थान देना।

इन उद्देश्यों को प्राप्त करने में इस संस्था को अत्याधिक सफलता प्राप्त हुई।

इस संस्था के तत्वावधान में हिन्दी भाषा, हरियाणा के हिन्दी साहित्य एवं हरियाणवी लोक साहित्य के रचनात्मकता शोध एवं समीक्षा को प्रोत्साहन देने तथा उसके समुचित विकास के लिये अनेक लेखक सम्मेलनों, संगोष्ठीयों आदि का आयोजन किया गया। हरियाणा के सभी लेखकों को इसके साथ जोड़ने का प्रयास किया गया और उन्हें राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त देश के मूर्धन्य साहित्यकारों के साथ सक्रिय संवाद का अवसर प्रदान किया गया।

तत्कालीय केन्द्रीय शिक्षा मंत्री प्रो. शेरसिंह का इस संस्था को संरक्षण प्राप्त था और वे निरन्तर इसके कार्यक्रमों में सक्रियता से भाग लेते रहे।

मिथकीय आयाम में “पृथु” की भूमिका पर एक अक्षर-व्रती:

डॉ. जयभगवान गोयल एक ऐसी अक्षर-साधना को समर्पित व्यक्तित्व है, जो आज एक “मिथकीय आयाम” में न केवल गहरा रेखांकन ही पा चुका है बल्कि “अवतरण चिन्ह” भी पा रहा है।

यह “मिथकीय आयाम” है एक पुराकालीन पुराण पुरुष द्वारा पृथ्वी के सर्वप्रथम पर्यवेक्षण, उत्खनन और विदोहन का। इसी धरातल पर वह ‘पृथु’ बना है। ऐसे ही “मिथकीय” धरातल पर डॉ. गोयल ने मध्ययुगीन शिलाखंडों का न केवल प्रथम परिक्रमण ही किया, प्रत्युत अपनी अनुसंधान क्षमताओं को उन पर निक्षेपित भी किया है। पांडुलिपियों के उन अस्पृश्य भूखंडों के उत्खनन के लिए पहली कुदाल-कस्सी चलाने की ऐतिहासिक भूमिका में स्वयं को प्रस्तुत किया है।

मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन की पंजाब के संदर्भ में अपनी कुछ मौलिक मुद्राएँ रही हैं। “आदिग्रंथ” भारतीय चिंतन का “विश्वकोश” है और “दशमग्रंथ” पौराणिक संपदा का “विश्वकोश” है। प्रतिबद्धता के धरातल पर दोनों ही संकल्पित पक्षधर रहे हैं। भारतीय संस्कृति के, दर्शन और मनीषा के, सर्वतोभद्र का के धरातल का यह मांगलिक अनुष्ठान भाषिक संदर्भ में अपने समय का एक समन्वय-मूलक प्रयोग रहा है।

हिंदी साहित्य के इतिहास में ऐसा प्रणयन ही मध्ययुगीन अस्पृश्य शिलाखंडों के रूप में अपना अस्तित्व बनाए हुए था। उस धरती पर परिभ्रमण, उत्खनन और विदोहन तथा परियोजन के “पृथु-संकल्प” की जमीन पर डॉ. गोयल एक समर्पित निष्ठा से उतरे हैं। साहित्य के इस अक्षय कोष का उन्होंने ने केवल ऐतिहासिक उद्घाटन और प्रारंभिक उत्खनन ही किया है, बल्कि उसका पुरातात्विक परी संस्कार, परिभाषण, व्याख्यायन, लिप्यंतरण और संपादन भी किया है। उन्होंने केवल लिप्यंतरण के कैमुदी-सूत्रों की स्थापना ही नहीं की है, प्रत्युत उसके व्यवहारिक आचरण को भी प्रतिष्ठित किया है। अपने अनुसंधानात्मक परीक्षण से ऐसी स्थापनाएं की हैं जिनके आलोक में मध्ययुगीन हिंदी साहित्य के इतिहास का पुनरीक्षण, परीक्षण और पुनरावलेखन एक बड़ी चुनौती बन गया है।

हिंदी साहित्य के इतिहास इस वर्ष वर्चस्वी व्यक्ति ने ‘कोलंबस’ की भूमिका से नई दिशाओं, क्षितिजों, कोणों का जो उद्घाटन किया है वह भारतीय संस्कृति के गौरव पर राष्ट्रीय एकता और अक्षुण्णता की सेतु रचना करता है।

राष्ट्रीय महत्व की अपनी उपलब्धियों के उपलक्ष्य में अपने क्षेत्र का यह सर्वाग्रगण्य अनुसंधाता राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्करण, अभिनंदन, सम्मान और स्वीकरण पा कर आज सिद्ध अक्षर होने की प्रक्रिया में आ चुका है। वह हमारे गौरव का मान बिंदु है। एक भव्य कीर्तिमान है।

डॉ. चन्द्रशेखर

पंजाबी विश्वविद्यालय

पटियाला

हिंदी साहित्य जगत में डॉ. जय भगवान गोयल एक प्रतिष्ठित एवं सुपरिचित हस्ताक्षर हैं। यह लगभग 40 वर्षों से साहित्य साधना में संलग्न हैं। शोध एवं समीक्षा कि उनकी 30 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और देश भर की हिंदी एवं पंजाबी की सभी शोध एवं साहित्यिक पत्रिकाओं में उनके 200 से अधिक शोध पत्र, निबंध, रिपोर्टाज, संस्मरण आदि छप चुके हैं।

डॉ. गोयल मध्ययुगीन साहित्य के मूर्धन्य विद्वान हैं। ये पहले अनुसंधाता हैं जिन्होंने पंजाब, हरियाणा तथा देश के अनेक पुस्तकालयों एवं गुरुद्वारों आदि में उपलब्ध सैकड़ों पांडुलिपियों का अन्वेषण और अनुशीलन करके इस तथ्य का उद्घाटन किया था कि गुरुमुखी लिपि में हिंदी ब्रजभाषा का बहुत बड़ी मात्रा में बहुत मूल्यवान साहित्य लिखा गया है। डॉ. गोयल ने इस साहित्य का बड़ी गंभीरता और विशदता से विवेचन, विश्लेषण करके साहित्यिक शोध के नए आयामों का उद्घाटन किया और मध्यकालीन साहित्य के इतिहास को सर्वथा नई दिशा और दृष्टि प्रदान की। यह उन्हीं के अनुसंधान और प्रेरणा का परिणाम है कि पिछले 35 वर्षों से इस क्षेत्र के अनेक विश्वविद्यालयों में इस शोध-सामग्री पर बड़ी मात्रा में शोध कार्य हो रहा है।

“बाल्मीकि रामायण”, “महाभारत” और संस्कृति की अन्य साहित्यिक संपदा तथा प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिंदी के समृद्ध वीरकाव्य परंपरा का गहन अनुशीलन करके डॉ. गोयल ने पंजाब की वीरकाव्य परंपरा की उदात्त काव्य चेतना के विविध आयामों को बड़ी कुशलता से प्रतिपादित किया है। उन्होंने ‘वीरकाव्य’ एवं ‘युद्ध काव्य’ के अंतर को स्पष्ट किया तथा गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध वीरकाव्यों की वीर भावना का “बाल्मीकि रामायण” तथा “महाभारत” की उदात्त वीर भावना से तादात्म्य स्थापित किया।

गुरु नानक से लेकर 19वीं शती तक के सिक्ख साहित्य, सूफी एवं संत साहित्य पर डॉ. गोयल ने महत्वपूर्ण कार्य किया है, जिससे हिंदी जगत में तो उन्हें अत्याधिक प्रतिष्ठा मिली ही है, सिक्ख साहित्य के विद्वानों, इतिहासकारों एवं बुद्धिजीवियों में भी उन्हें बहुत सम्मान प्राप्त हुआ है। उन्होंने अपने लेखन में सर्वत्र हिंदुओं और सिक्खों की सांस्कृतिक, सामाजिक एवं भावात्मक अभिन्नता का प्रतिपादन करते हुए राष्ट्रीय एकता की भावना को दृढ़ किया है। डॉ. गोयल को ही यह श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने 18वीं-19वीं शताब्दी के हिंदी के एक महाकवि भाई संतोखसिंह से हिंदी जगत को परिचित करवाया है और उन पर विशिष्ट शोध कार्य किया है। महाकवि संतोखसिंह ने कैथल और बुडिया में रह कर 60000 छन्दों का हिंदी का महाकाव्य “गुरु प्रताप सूरज” लिखा था, जो दुनिया का सबसे बड़ा महाकाव्य है।

हरियाणवी लोक साहित्य को उजागर करने में भी डॉ. गोयल का अग्रगण्य स्थान है।

EXTRACT OF THE RESOLUTION

Representatives of Kendri Guru Singh Sabha, Delhi S.G.P.C. Amritsar, Delhi Sikh Gurdwara Committee, U.P. Sikh Pratinidhi Board, assembled at Kurukshetra have in a resolution resolved that the Central Govt. is urged to confer the award of Padmabhushan on Prof. Jai Bhagwan Goyal of Kurukshetra University who has published 20 books and over a hundred research papers relating to sikh literature during the last 33 years and has done commendable work for promoting National Unity and National Integration.

